साहित्यसुधा
साहित्यकारों की वेबपत्रिका

साहित्यकारों की रचना स्थली
वर्ष: 3, अंक 54, फरवरी(प्रथम) , 2019

मैत्रेयी पुष्पा का आंचलिक संसार

डॉ.दीपा गुप्ता

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में आंचलिक संवेदना उभर कर आयी है। उनका रचना–संसार किसी विशिष्ट अंचल की संस्कृति, प्रथाओं, रहन–सहन, रीति–रिवाज, भौगोलिक सीमाओं से परिचय कराता है। आंचलिक कथाकार वर्तमान राजनीति तथा सामाजिक समस्याओं का चित्रण कर जनता को जागरूक कर लोकतंत्रात्मकता की भावना उत्पन्न करता है। अनीति के विरूद्ध विद्रोह की प्रेरणा देता है।

बुन्देलखण्ड मध्यप्रदेश के अंचल में बसा ऐसा भू–भाग है, जिसकी अपनी अलग सांस्कृतिक पहचान है। यहाँ की जातियों, जनजातियों का रहन–सहन, परंपराएं, मान्यताएं, लोकाचार सभी अलग होते हैं। मैत्रेयी जी ने अपनी रचनाओं के केंद्र बिन्दु के रूप में इस अंचल को चुना है।इन्होंने इदन्नमम, चाक, झूलानट, अल्माकबूतरी, बेतवा बहती रही आदि उपन्यासों के माध्यम से बुंदेलखण्ड अंचल की संस्कृति से सभी को परिचित कराया है। यह हिंदी क्षेत्र होते हुए भी तनिक भिन्न है। यहाँ मनाये जाने वाले पर्व–त्योहार भी हिंदू पर्व–त्योहार ही है पर साथ में कुछ विशेष त्योहार भी मनाये जाते है जिस कारण इस अंचल की अलग सांस्कृतिक पहचान बन गई है।

मैत्रेयी जी का बाल–परिवेश भी यही क्षेत्र रहा है। इनके जीवन पर इसकी गहरी छाया परिलक्षित होती है। इसका दिग्दर्शन इनकी रचनाओं में होता है। बुंदेलखंड की सभ्यता और संस्कृति को इन्होने करीब से महसूस किया है। इस कारण इनकी व्याख्या भी चित्रात्मकता को समेटे हुए है।

एक ओर जहाँ इनकी रचनाओं में बुंदेलखंड की सभ्यता व संस्कृति झलकती है वही दूसरी ओर नयी–नयी बातों से परिचय कराते हुए पाठक को रसाविभोर करके यहाँ की समस्याओं से भी अवगत करा देती हैं।

बुंदेलखंड भारत का भू–भाग होते हुए भी अपनी अलग सांस्कृतिक पहचान बनाए हुए है। यहाँ की मिट्टी

की अलग ही सोंधी महक है जो अपनी संस्कृति की पहचान समेटे हुए है। गाँव के भोले–भाले लोग अपनी संस्कृति को अपनी पहचान मानते हैं। परंपरा से चली आ रही प्रथाओं को बड़े लगन ओर जतन से पालन करते हैं। सभी पर्व और त्योहारों को लगन और उत्साह से मनाते हैं।

आज जहाँ लोगो के बीच में वैश्वीकरण की भावना बलवती हो रही है। लोगों का रुझान इन सभ्यता संस्कृति से दूर होकर आत्म–केन्द्रीत होता जा रहा है। ऐसी स्थिति में मैत्रेयी जी के द्वारा बुंदेलखंड का चित्रण जिसमें बुंदेलखंड के लोगों के द्वारा आत्मविभोर होकर अपने पर्व–त्योहार को मनाना, अपनी सभ्यता व संस्कृति के प्रति अटूट श्रद्धा, ये सभी बातें भारतीय संस्कृति को तो नयी बल प्रदान करती ही है साथ ही भारतीय साहित्य में भी श्री वृद्धि करती है। वैश्वीकरण के युग में संस्कृति व सभ्यता प्रधान रचनाएं साहित्य पाठकों के लिए मर्मस्पशी होती है।

मैत्रेयी जी के उपन्यासों की विशेषता उनके पात्रों में छिपि है। उनके पात्र सजीव आंचलिक हैं। उनके हाव–भाव, व्यवहार, सोच, पहनावा–ओढ़ावा, रहन–सहन सभी में आंचलिकता की झलक दिखाई देती है। मैत्रेयी जी ने पात्रों के माध्यम से बुंदेलखंड अंचल को उपन्यासों में उभारा है। ग्रामीण अंचल के पात्रों के रहन–सहन तथा उनके व्यवसाय भौगोलिक स्थिति पर निर्भर होता है।

बुंदेलखण्ड अंचल में कई तरह के पात्र हमें देखने को मिलते हैं। मैत्रेयी जी का उद्देश्य यहाँ कुछ व्यक्ति या व्यक्ति विशेष की कहानी कहना नहीं, बल्कि संपूर्ण अंचल की कहानी कहना है। इनके उपन्यासों में परंपरागत उपन्यासों जैसा प्रधान पात्र या शास्त्रीय शब्दावली में 'नायक' तो होता ही है परन्तु वहाँ पर उसकी प्रधानता कम तथा अंचल की प्रधानता अधिक होती है। चरित्र निर्माण की दृष्टि से नायक शून्यता इनके आंचलिक उपन्यासों का एक वैशिष्ट्य बन जाता है। यहाँ अंचल स्वयं एक जीवंत विशिष्ट समूह पात्र है और शेष सभी पात्र उसके सामूहिक अंग है।

इन समूह पात्र की कल्पना के फलस्वरूप पात्रों का बाहुल्य और उनकी चरित्रगत विविधता इनके आंचलिकता की विशेषता है। पात्रों की अधिक संख्या की योजना इनके उपन्यासों में सोद्देश्य पूर्ण है। इन्होंने अंचल–जीवन को समग्रता से उभारने के लिए अनेक कहानियों और प्रसंगों की सृष्टि की हैं ताकि

आंचलिक जीवन का कोई पक्ष अनछूआ अनदेखा न रह जाए इसलिए इन पक्षों से संबंधित अनेक पात्र आये हैं और मैत्रेयी इन पात्रों के चरित्र तथा व्यक्तित्व को कहीं गहरे रंग से तो कहीं हल्के रंग से आड़ी–तिरछी रेखाओं से उभारती चली है। अंचल की विविधता का रूप देने के लिए मैत्रेयी जी कभी इस कोण पर खड़ी हुई हैं, कभी उस कोण पर, कभी निचाई पर, कभी ऊँचाई पर। इसमें अनेक पात्र है और हर पात्र की सत्ता का अलग महत्व है। इसमें हर पात्र एक–दूसरे के निमित्त नहीं बल्कि अंचल के निमित्त हैं।

मैत्रेयी जी ने अंचल जीवन को समग्रता से रूपायित करने के लिए आंचलिक जीवन के विविध पक्षों को उद्घाटित करने वाले विभिन्न वर्गो, विविध स्वभाओं और भिन्न–भिन्न स्तर के पात्रों की योजना की है कुछ पात्र अंचल जीवन के आर्थिक पक्ष से जुड़े हैं तो कुछ नैतिक, धार्मिक और सांस्कृतिक पक्षों से; कुछ पात्र अंचल की जीवंतता के प्रतीक बनकर आये हैं तो कुछ वर्तमान टूटन, घुटन और कुंठाओं के, कुछ विभिन्न राजनीतिक विचारों और पार्टियों के झंडाबदार बनकर उतरते हैं, तो कुछ ग्रामीण जीवन में व्याप्त जातिवाद, दलबंदी, यौनभ्रष्टाचार और रूढ़िवादी परंपराओं के पोषक। इस कारण मैत्रेयी जी के उपन्यासों में पात्रों की बहुसंख्या एक अनिवार्यता बन गई है। परन्तु मैत्रेयी सभी पात्रों के समग्र व्यक्तित्व का आलेखन न कर, केवल उतना ही की है जितना विषय–वस्तु की मांग तथा अंचल विशेष की प्रवृति के दिग्दर्शन के लिए आवश्यक है।

मैत्रेयी जी की चरित्र निमार्ण कल्पना में एक और विशिष्टता दिखाई देती है, पात्रों के बहिरंग चित्रण में स्थानीय वेश–भूषा तथा उनके रूपाकार में आंचलिक या स्थानीय विशिष्टता।मैत्रेयी जी अपने पात्रों को अंचल की विशिष्ट गंध, रूप–रंग वाली मिट्टी से गढ़ी हैं। उन्हें आंचलिक वेश–भूषा से सजायीं है और आंचलिक उपादानों से ही उनके बाह्य रूपाकारों का निमार्ण की है।जैसे इदन्नमम उपन्यास में उद्धृत है किं लोग अपने घरों की किवाड़ 'तेल पानी से चिकनी' करते हैं; उदाहरण भी ऐसे ही देते है– 'बार श्रृंगार, बार जंजार' लोग मन की बेचैनी को ऐसे ही व्यक्त करते हैं "सीने की तेज धुकधुकी जोर–जोर से बज रही है नगाड़े की तरह।" लोग स्वाद भी ऐसे ही व्यक्त करते हैं "उसके मुंह में पित्त जैसी कड़वाहट घुल गई। कंठ तक भर आया तिक्त विष सरीखा द्रव।" विशेष त्योहारों पर रमतूला बाजा बजाया जाता है। "रमतूला बजा, टूऊँऽऽ, टूऊँऽऽ" मां बेटी के प्रेम को व्यक्त किया गया है। "मतारी की गऊसाला में बछेरू बने पिड़े

रहे।"

मैत्रेयी जी के इन उपन्यासों को पढ़कर अंदाजा लगाया जा सकता है कि ये सभी चित्रण बुंदेलखंड की झांकी प्रस्तुत करते हैं। लेखिका की रचना के माध्यम से संपूर्ण बुंदेलखंड चित्रात्मक हो उठता है।

मैत्रेयी जी के उपन्यासों की कथा भूमी–अलग–अलग विशिष्टताएं लिए हुए भी कुछ मायनों में एक ही है– अशिक्षा, गरीबी, शोषण, अंधविश्वास, रूढ़िवादिता, जातिवाद, वर्गवाद, स्थानीय राजनीति, वर्ग संघर्ष , लोक जीवन के तत्व तथा असभ्यता, उनके सभी आंचलिक उपन्यासों में सामान्य रूप से दिखाई देता है।गाँव में समाज संरचना के मुख्य रूप से दो आधार हैं–अर्थ और जाति। आर्थिक संपनता–विपन्नता और जातिगत कुलीनता–अकुलीनता या उच्चता–नीचता के मानदंड पर ही ग्रामीण समाज वर्गो में विभाजित है। आर्थिक दृष्टि से संपन्न या उच्च जाति में उत्पन्न व्यक्ति 'उच्च वर्ग' में उनसे कुछ कम संपन्न व्यक्ति 'मध्यम वर्ग' में और गरीब, विपन्न तथा छोटी जाति के लोग 'निम्न वर्ग' में गिने जाते हैं। वर्गीय उच्चता निम्नता के लिए आर्थिक आधार जातिगत आधार से अधिक महत्वपूर्ण हैं।

वर्गीय स्वार्थ और वर्ग चेतना इन तीनों वर्गो के पात्रों के स्वभाव, गुण, व्यवहार और क्रियाकलापों में भिन्नता लाकर अलग–अलग चारित्रिक वैशिष्टय पैदा कर देती है और इस प्रकार भिन्न–भिन्न वर्गीय चरित्र के निर्माण में सहायक होती है। इसके साथ–ही–साथ मैत्रेयी जी ने जिन पहलुओं पर ज्यादा जोर दिया है वह है समाज में नारी के स्थान पर। इन्होंने अंचल में नारियों को अपने अस्तित्व के लिए कर रहे संघर्ष को मुख्य मुद्दा बनाया है – झुलानट की शीलो हो या अल्माकबूतरी की अल्मा, इदन्नमम की मंदाकिनी हो या कस्तूरी कुण्डल बसै की स्वयं कस्तूरी। सभी नारियाँ अपने–अपने स्तर पर अपना–अपना अस्तित्व बनाने के लिए समाज से संघर्ष कर रही है।

आंचलिक उपन्यासों में पात्रों के चरित्र–चित्रण के लिए मैत्रेयी जी द्वारा अपनायी गई विविध प्रविधियों के विश्लेषण के पश्चात् हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि इन उपन्यासों की विविधतापूर्ण विशाल पात्र संख्या के चरित्रांकन के लिए सूक्ष्मातिसूक्ष्म विश्लेषणात्मक मनोवैज्ञानिक प्रविधियों से लेकर निर्वैयक्तिक नाटकीय प्रविधि और स्थूल बहिरंग चित्रण प्रविधि तक का प्रयोग किया गया है। प्रधान पात्रों के चरित–चित्रण में

उनके आंतरिक व बाह्य स्वरूपों के उद्घाटन को समान महत्व दी हैं पर गौण पात्रों की भी उपेक्षा भी नहीं की गई है, भले ही उसका अंतरंग चित्रण की अपेक्षा बहिरंग चित्रण ही अधिक हुआ है। जिस किसी भी पात्र में अपना वैयक्तिक वैशिष्ट्य है उसको भी उचित मात्रा में रेखांकित किया गया है।

चूकि आंचलिक उपन्यासों में सर्वप्रथम पात्र तो अंचल ही होता है तथा अन्य सभी पात्र उस अंचल नायक के संश्लिष्ट जीवन के विविध पक्षों के परिचायक, इसलिए उन सबके समवेत चरित्र का अंचल–नायक के बहुआयामी चरित्र में पूर्णत: पर्यवसित हो जाने में ही उसकी सार्थकता है। इस दृष्टिकोण को सामने रखकर ही मैत्रेयी जी ने अपने पात्रों का चरित–चित्रण किया है। डॉ.दया दीक्षित ने 'मैत्रेयी पुष्पा तथ्य और सत्य' में लिखा है मधुरेश ने कहा है– "मैत्रेयी पुष्पा का 'चाक' स्त्री विमर्श का उपन्यास है, जो इस विमर्श को देशज प्रकृति का खुलासा करता है। वे इस विमर्श को पढ़ी–लिखी, नौकरीपेशा, बुद्धिजीवी स्त्री की सीमा से बाहर निकालकर गाँव और खेत खलिहान में काम करती स्त्री से जोड़ती है" (पृष्ठ 61)

उपन्यास में वस्तु योजना का मुख्य उद्देश्य पात्रों का चरित्रोद्घाटन भी होता है। अंचल की व्यथा कहने वाले उपन्यासों में कथोपकथन का प्रयोग इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए ही मुख्य रूप से किया जाता है। मैत्रेयी जी के 'इदन्नमम' उपन्यास को हिंदी का उपन्यास न कह के बल्कि बुंदेलखंडी उपन्यास कहना अधिक समीचित है। खडी बोली हिंदी का एक सार्वदेशिक नागर रूप तो है ही, लेकिन जब वह इस अंचल में अभिव्यक्ति का माध्यम बनती है तो स्थानीय रंग उस पर हावी हो जाता है। इसमें भाषा के दो रंग हैं एक उसका स्वाभाविक बुंदेलखंडी रूप जो बऊ के संवादों में निखर आया है। "फिराक नहीं बदली मोड़ी ने! बिराने गाँव में ऐसे ही... उघारे गोड़े! सिलवार कुर्ता पहर लेती तो अच्छा रहता।"

मैत्रेयी जी ने कथावस्तु में पात्रों के माध्यम से बुंदेलखंड की सभ्यता, संस्कृति, लोकाचार, लोकरीति तथा वहाँ की समस्याओं को प्रस्तुत किया हैं। सामान्य भारतवर्ष में मनाए जाने वाले त्योहार तो वहाँ मनाए ही जाते हैं परन्तु कुछ त्योहार केवल वहाँ ही विशेष रूप से मनाए जाते हैं, जिसमें आक्ति, सुआटा का त्योहार, भुंजरियों का त्योहार आदि। होली के संदर्भ में यहाँ की मान्यता भिन्न है। पूरे भारतवर्ष में रंगों का त्योहार पूर्णिमा के दिन खेला जाता है, पर इस क्षेत्र में यह पूर्णिमा के दिन केवल पूजा–पाठ करके दौज के दिन होली

खेली जाती है, क्यों कि परमा के दिन झांसी को अंग्रेजो ने अपना लिया था और आक्रोश में रानी व प्रजा ने होली नहीं मनाई थी। उस समय से वहाँ यह प्रथा चली आ रही है कि पूर्णिमा को पूजा–पाठ परमा को शोक और दौज को होली।

धार्मिक विश्वास, रूढ़ियाँ, रीति–रिवाज वहाँ पूरी तरह से फैले हुए हैं। किसी भी प्रकार की समस्या का समाधान के लिए 'सिद्ध–दच्वी' के पास लोग जाते हैं। जादू टोना और टोटका का साया पूरी तरह से छाया हुआ है। विशेष प्रथाओं में नयी बहू का नाम रखना, रक्कस देना यहाँ विशेष रूप से पालन किया जाता है।

बुंदेलखंड क्षेत्र में गरीबी भी अपना पांव पसारे हुए है जिस कारण वहाँ का पहनावा व खान–पान सामान्य ही है। वहाँ पर गरीब मजदूर 'पंजा' पहनते हैं यह धोती का दो भाग होता है जिसे मजदूर खेत में काम करते समय पहनते हैं। 'साफ़ी' का भी प्रयोग करते हैं, जो कपड़े का एक टूकड़ा होता है जिसे कंधे पर रखते हैं, जो पसीने पोछने के काम आता है। लड़कियाँ फ्रॉक तथा महिलाएं साड़ी जिसे वहाँ धोती कहते हैं का प्रयोग करती है। बऊ कहती है कि कुसुमा मंदा से कहो कि अब सिलवार कुरता नहीं सोहते नोंने धुतिया पहरा करे। खान–पान की दृष्टि से रोटी ज्यादा पसंद किया जाता है। निम्न वर्ग के लोग कोदो, ज्वार, बाजरे को पका–पका कर खाते हैं। लेखिका ने अल्मा कबूतरी मे लिखा है कि कदमबाई चूल्हे के पास बैठी कोदो रांध रही थी।

आर्थिक दृष्टि से यहाँ के लोगों की स्थिति बहुत पिछड़ी हुई है। आधुनिक तकनीक व साधन यहाँ तक नहीं पहुंच पाए हैं ना ही बड़े–बड़े उद्योग–धंधे हैं। इस कारण लोगों को रोजगार के अवसर के लिर पूरी तरह से खेत पर ही निर्भर रहना पड़ता है। बहुत से लोगों के पास खेत भी नहीं! हैं भी तो बंधक! सेठ साहुकार उनके साथ मनमाना व्यवहार करते हैं।

बुंदेलखंड क्षेत्र में निम्न वर्ग के लोग उनमें विशेष रूप से नारियों की स्थिति बहुत दयनीय है। उच्च वर्ग व पुलिस उनके साथ मनमाना पशु–तुल्य व्यवहार करते हैं। वे अपने जीवन को कर्म–किस्मत मान बैठे हैं। साथ ही मैत्रेयी जी ने व्यक्ति के मानसिक द्वंद को बखूबी उभारा है। अल्मा कबूतरी में कज्जा उच्च वर्ग है

उसके जीवन में बहुत से नियम कानून है, दायरे हैं जिसमें वह घुटन महसूस करता है तथा कभी–कभी सभी नियमों को तोड़कर आजादी की सांस लेना चाहता है। जिसकी अभिव्यक्ति मंसा के माध्यम से की गई है।इस तरह मैत्रेयी पुष्पा ने अपने उपन्यासों में जीवंत आंचलिक संसार बसाया है।

... ...

डॉ दीपा गुप्ता, एम.ए., एल.एल.बी.,बी.एड.,पीएच.डी. (हिंदी प्राध्यापिका)

संपर्क सूत्र- विल्ला नं. 99, सरदार नेस्ट, गाजुवाका, विशाखपट्टणम–44, आंध्र प्रदेश
फोन- **0891–2970538, 9177085288**
ई मेल : deepawan99@gmail.com

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें